

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया में 'जेंडर्ड इम्पेक्ट्स ऑन एक्सेस टू एजुकेशन एंड टेक्नॉलोजी ड्यूरिंग कोविड-19' पर कार्यशाला आयोजित

जामिया मिल्लिया इस्लामिया ने आज डेलनेट, जेएनयू कैंपस, नेल्सन मंडेला रोड, दिल्ली में 'जेंडर्ड इम्पेक्ट्स ऑन एक्सेस टू एजुकेशन एंड टेक्नॉलोजी ड्यूरिंग कोविड-19' पर एक दिवसीय शोध प्रसार कार्यशाला की मेजबानी की। यह कार्यशाला चार सहयोगी संस्थानों की एक सहयोगी परियोजना का हिस्सा थी और इसे एंजेला रस्किन विश्वविद्यालय (एआरयू), ऑक्सफोर्ड, यूके द्वारा शुरू और प्रायोजित किया गया था। भागीदार संस्थानों में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू), उत्तर प्रदेश, जादवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता, राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान (एनआईपीए), नई दिल्ली और जेएमआई, नई दिल्ली शामिल थे।

कार्यशाला में शिक्षाविदों और शोधकर्ताओं की भागीदारी रही, जो कोविड -19 महामारी के दौरान शिक्षा तक एक्सेस में उभरते मुद्दों पर चर्चा करने, अनुसंधान जानकारी और ज्ञान को साझा करने, चुनौतियों पर विचारों का आदान-प्रदान करने के लिए और आगे की कार्रवाई के लिए सतत और समावेशी विकास के लिए प्रतिबद्ध हैं।

डॉ. दिनेश प्रसाद सकलानी, निदेशक, एनसीईआरटी उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि थे, जिसमें कुलपतियों, शिक्षाविदों और विशेषज्ञों ने भाग लिया। एआरयू, यूके की डॉ. सुनरिता धर-भट्टाचार्य ने अपने संबोधन में परियोजना के बारे में विस्तार से बताया।

उद्घाटन सत्र में जामिया की कुलपति प्रो नजमा अख्तर ने वक्ताओं और अतिथियों का स्वागत किया। अपने उद्घाटन भाषण में कुलपति ने कहा, "अनुसंधान प्रसार कार्यशाला के उद्देश्यों में पेशेवर एसोसिएशंस के बीच ज्ञान के आदान-प्रदान की सुविधा शामिल है ताकि परिणामों का व्यापक समुदाय के लाभ के लिए उपयोग किया जा सके। उनका उद्देश्य परियोजना के निष्कर्षों को साझा करना और समुदायों के बीच शिक्षा और प्रौद्योगिकी तक पहुंच पर कोविड -19 के जेंडर संबंधी प्रभावों को दूर करने के लिए जागरूकता और कार्य योजना बनाना है।

सभी सहयोगी संस्थानों ने अपने चुने हुए क्षेत्रों में पायलट आधार पर एक अध्ययन किया, जिसका उद्देश्य तेजी से बदलते समय के बीच, विशेष रूप से कोविड-19 महामारी की पृष्ठभूमि में, 21वीं सदी के कौशल, शिक्षा में लैंगिक समानता और प्रौद्योगिकी तक पहुंच के अनुरूप भविष्य की नई शुरुआत के लिए एक उपकरण के रूप में डिजिटल लर्निंग पर विमर्श करना है। "जेएमआई ने दो स्थानों पर: शफीक मेमोरियल सीनियर सेकेंडरी स्कूल, बाड़ा हिंदू राव, सदर बाजार, वाल्ड सिटी क्षेत्र दिल्ली और जामिया के स्कूलों में" अध्ययन किया है, प्रो. अख्तर ने बताया।

कुलपति ने कहा कि यह अध्ययन जामिया स्कूलों और शफीक मेमोरियल स्कूल पर किया गया था, जहां छात्रों की एक बड़ी संख्या, मुख्य रूप से मुस्लिम, शहरी गरीब तबके से आती है। मुस्लिम पुरुष और महिला साक्षरता कौशल में लैंगिक असमानता तेजी से महसूस की जाती है। यह नुकसान इस समूह को हाशिए पर रखता है, इसलिए, यह भेदभाव के प्रति संवेदनशील है। जामिया और उसके सहयोगियों ने इस उम्मीद के साथ परियोजना पर सहयोग किया है कि यह सभी के लिए प्रौद्योगिकी तक स्थायी पहुंच में सुधार करने के तरीके पर नई सहमति बनाएगा। इसका उद्देश्य सामूहिक कार्रवाई के लिए विशिष्ट और प्रत्येक क्षेत्रीय / स्थानीय आवश्यकता के अनुरूप एक मंच पर एक साथ आना है।

समारोह के विशिष्ट अतिथि डॉ. एम.सी. पंत, चांसलर, एनआईपीए और विशिष्ट अतिथि डॉ. सतीश चंद्र द्विवेदी ने भी प्रतिभागियों को संबोधित किया। उद्घाटन सत्र प्रो. नाजिम हुसैन अल-जाफरी, रजिस्ट्रार, जामिया द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ समाप्त हुआ।

जादवपुर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो सुरंजन दास की अध्यक्षता में कार्यशाला के पहले सत्र में संबंधित क्षेत्र के शोधकर्ताओं द्वारा क्षेत्रीय अनुसंधान रिपोर्ट प्रस्तुत की गई।

सेम्पल राज्यों के प्रतिनिधियों ने दूसरे सत्र में अपने अनुभव और उनके द्वारा की गई पहलों को साझा किया। दिल्ली से श्री शैलेन्द्र शर्मा, पश्चिम बंगाल से श्री शुभ्रा चक्रवर्ती, उत्तर प्रदेश से डॉ. सतीश चंद्र द्विवेदी प्रतिनिधि थे।

तीसरे सत्र में, प्रो. अंजू शरण उपाध्याय ने एक पैनल चर्चा की अध्यक्षता की, जहां प्रो. नीलिमा श्रीवास्तव, एसजीडीएस, इग्नू प्रो. वीना कपूर (सेवानिवृत्त), दिल्ली विश्वविद्यालय और प्रो हीना बिजली, एससीई, इग्नू पैनलिस्ट थे।

प्रो. प्रियांकर उपाध्याय की अध्यक्षता में समापन सत्र में सहयोगी संस्थाओं के सदस्यों ने आगे की योजना पर चर्चा की और कार्यवाही का सुझाव दिया। डॉ. सुनरिता धर- भट्टाचार्य ने समापन भाषण दिया। प्रतिभागियों ने सहमति व्यक्त की कि उन्हें क्षेत्र में मौजूदा ट्रेंड से सीखना है, उन्हें अपनाना है, और प्रौद्योगिकी को अनुकूलित करना है। उन्हें प्रौद्योगिकी के प्रयोग और प्रयोग से डरना नहीं चाहिए क्योंकि उन्हें अनिश्चितता के बावजूद आगे आने वाली असीमित संभावनाओं का पता लगाना है।

प्रो. एजाज मसीह, शिक्षा संकाय, जामिया द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला का समापन हुआ।

जनसंपर्क कार्यालय

जामिया मिल्लिया इस्लामिया